शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 17
Issue 1&2
15, Jan- July, 2026

वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक विकास

बीज शब्द :

भारतीय ज्ञान प्रणाली, अविच्छिन्न बौ)क विरासत, भारतीय जीवन मूल्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पुनर्जागरण, राष्ट्रीय शिक्षानीति, मानव कल्याण

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं अविच्छिन्न बौद्धिक विरासतों में से एक है । यह परंपरा मात्र सूचनाओं का संग्रह नहीं अपितु जीवन दर्शन का समन्वित स्वरूप है, जो भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के समन्वय पर बल देती है। भारतीय ज्ञान के स्रोतों में वेदों से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान तक का विशाल साहित्य सम्मिलित है, जो निरंतर गतिशील एवं विकासशील प्रकृति का द्योतक है। भारतीय सभ्यता ने सदैव ही ज्ञान-साधना को मानव जीवन का उच्चतम लक्ष्य माना है, जिसके कारण यहाँ विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान सम्भव हुआ। यह लेख वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक विकास का सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत करेगा।

*****

डॉ. राहुल सैनी
हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक विकास

वैदिक काल (१५००-५०० ई. पू.) - ज्ञान परंपरा का आदिस्रोतः

वैदिक काल भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार माना जाता है। इस काल की ज्ञान-साधना का केन्द्र बिन्दु चार वेद - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद हैं, जिन्हें मानव सभ्यता के प्राचीनतम लिखित ग्रंथों का गौरव प्राप्त है। वेदों में ज्ञान के तीन मुख्य पहलू - ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। इन ग्रंथों में विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और दर्शन सहित विभिन्न विषयों के मूल सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है।

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवाभागं यथा पूर्वे, सजनानां उपासते"[1]

वैदिक शिक्षा प्रणाली गुरुकुल के रूप में संस्थागत रूप लेती थी, जहाँ छात्र अपने गुरु के सानिध्य में निवास करते हुए ज्ञान अर्जित करते थे। इस प्रणाली में मौखिक परम्परा का विशेष महत्व था, जहाँ ज्ञान का श्रुतिपरम्परा द्वारा संरक्षण एवं संप्रेषण होता था। शिक्षा का माध्यम संस्कृत होती थी, जिसे विश्व की सर्वाधिक परिष्कृत भाषाओं में से एक माना जाता है और जिसने अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं को जन्म दिया।

वेद मुख्य विषय उपविभाग, ऋग्वेद देवताओं के स्तोत्र, प्रकृति चिंतन, 10 मण्डल, सामवेद संगीतमय मन्त्र, राग-रागिनियाँ ध्रुपद राग का हिस्सा, यजुर्वेद यज्ञीय कर्मकाण्ड, अनुष्ठान विधियाँ, शुक्ल एवं कृष्ण भेद, अथर्ववेद जनसामान्य की आशाएँ, चिकित्सा, जादू-टोना रोग निवारण के सूत्र मिलते हैं।

प्राचीन काल की ज्ञान परंपराएँ और प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थी। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। आचार्य यास्क निरूक्त में कहते हैं- "नहोषु प्रत्यक्षमस्तिअनुषेरतपससो वा"[2]

वैदिक काल के उत्तरार्ध में उपनिषदों का प्रादुर्भाव हुआ, जो वेदों के दार्शनिक तत्व का प्रतिपादन करते हैं। उपनिषदों में ब्रह्म (सार्वभौमिक चेतना), आत्मन (व्यक्तिगत आत्मा), और कर्म के सिद्धांत जैसे मौलिक अवधारणाओं का प्रतिपादन किया गया। ये ग्रंथ आध्यात्मिक जिज्ञासा और तर्कसंगत चिंतन के बीच सेतु का कार्य करते हैं, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीज निहित हैं।

उपनिषद् एवं महाकाव्य काल (५००-२०० ई. पू.) - दार्शनिक आधारों का सुदृढ़ीकरणः

उपनिषद् काल में भारतीय ज्ञान परंपरा ने दार्शनिक गहनता की ओर महत्वपूर्ण मोड़ लिया। इस काल में आत्मन-ब्रह्म की एकता, कर्म-सिद्धांत और पुनर्जन्म जैसी अवधारणाओं का सुव्यवस्थित प्रतिपादन हुआ। उपनिषदों में प्रतिपादित 'तत्त्वमसि' (तू वही है) और 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) जैसे महावाक्य भारतीय दर्शन के अद्वैत तत्व को दर्शाते हैं।

उपनिषद के अनुसार "सा विद्या या विमुक्तये"(जो मुक्ति के योग्य बनाएं वह विद्या, बाकी सब अविद्या ।)

वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन धर्म का मूल संस्कार तथा विचारधारा है जो महा उपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिपिबद्ध है। इसका अर्थ है-धरती ही परिवार है (वसुधा एव कुटुम्बकम)। यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है।

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् द्यद्य"

इसी काल में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना हुई, जिनमें धर्म, नैतिकता और शासन के सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन किया गया। महाभारत के शान्ति पर्व में राजधर्म और दण्डनीति पर गहन चिंतन मिलता है, जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र का पूर्वरूप माना जा सकता है। इन ग्रंथों ने भारतीय जीवन मूल्यों और सामाजिक संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महाभारत के अनुसार "नास्ति विद्या सैम चक्षु" (विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है।)

शास्त्रीय काल (५०० ई. पू. - १२०० ई.) - विविध ज्ञान शाखाओं का विस्तारः

शास्त्रीय काल में भारतीय ज्ञान परंपरा ने बहुआयामी विकास किया, जिसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा और दर्शन के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई. इस काल में वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा जैसे छह दार्शनिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिन्होंने भारतीय चिन्तन पद्धति को विशिष्ट दिशा प्रदान की। प्रत्येक सम्प्रदाय ने तत्त्व-मीमांसा, ज्ञान-मीमांसा और नैतिकता पर अपने विशिष्ट दृष्टिकोण विकसित किए।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी योगदानः

भारत के वैज्ञानिक परंपरा के स्वर्णिम अध्याय के रूप में शास्त्रीय काल को याद किया जाता है. आर्यभट्ट ने शून्य की खोज की और ग्रहों की गति का गणितीय अध्ययन प्रस्तुत किया। वराहमिहिर ने खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जबकि चरक और सुश्रुत ने आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। धन्वंतरि को आयुर्वेद का जनक माना जाता है, जिन्होंने निदान और चिकित्सा के सिद्धांत विकसित किए।

आर्यभट्ट ने 476-550 ई. में शून्य की खोज की। गणित, खगोल से संबंधित,आर्यभट्टीय ग्रन्थ की रचना की। वराहमिहिर ने 505-587 ई. में ज्योतिष, खगोल से संबंधित, पंचसिद्धान्तिका ग्रंथ की रचना की। चरक ने 300 ई. पू. में आयुर्वेदिक चिकित्सा से सम्बन्धित, चरक संहिता की रचना की। सुश्रुत ने 600 ई. पू. में शल्य चिकित्सा, से संबंधित सुश्रुत संहिता की रचना की। पाणिनि ने 500 ई. पू. में व्याकरण से संबंधित, अष्टाध्यायी ग्रंथ की रचना की।

विशिष्ट ज्ञान शाखाओं का विकास:दृ

इस काल में 18 विद्याओं और 64 कलाओं के रूप में ज्ञान का व्यवस्थित वर्गीकरण किया गया। 18 विद्याओं में चार वेद, चार उपवेद (आयुर्वेद - चिकित्सा, धनुर्वेद - शस्त्रविद्या, गंधर्ववेद - संगीत और शिल्प - वास्तुकला), पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र और वेदांग सम्मिलित थे। वेदांग में छह सहायक विज्ञान - शिक्षा (ध्वनि विज्ञान), व्याकरण, छन्द (काव्य मीमांसा), निरुक्त (व्युत्पत्ति विज्ञान), ज्योतिष (खगोल विज्ञान) और कल्प (अनुष्ठान विज्ञान) सम्मिलित थे।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र इस काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है, जो राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र और कूटनीति का विश्वकोश माना जाता है। अर्थशास्त्र में राज्य के स्तम्भ, शासन प्रणाली, अर्थव्यवस्था प्रबंधन, युद्धनीति और कूटनीति जैसे विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है। कौटिल्य ने दण्डनीति के चार प्रकार बताए - आन्वीक्षिकी (तर्कशास्त्र), त्रयी (तीन वेद), वार्ता (अर्थशास्त्र) और दण्डनीति (शासन विज्ञान)।

मध्यकालीन युग (१२००-१७०० ई.) - परिवर्तन और समन्वय का दौर:

मध्यकालीन युग में भारतीय ज्ञान परंपरा ने नवीन आयाम ग्रहण किए। इस काल में राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद बौद्धिक गतिविधियाँ निरंतर जारी रहीं। भक्ति आंदोलन और सूफी परम्परा का उदय और विस्तार हुआ, जिसने धार्मिक एकता और सामाजिक समन्वय पर बल दिया। इन आंदोलनों ने जनसामान्य तक ज्ञान की पहुँच सुनिश्चित की और सामाजिक समरसता का संदेश फैलाया।

इस युग में पुराणों और तंत्र ग्रंथों जैसे विश्वकोशीय ग्रंथों का संकलन हुआ। मध्यकालीन शासकों और राजवंशों ने विद्वानों का संरक्षण जारी रखा, जिसके कारण साहित्य, कला और वास्तुकला के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई । इस काल में भारतीय ज्ञान और इस्लामी ज्ञान परंपरा के बीच सृजनात्मक संवाद का सिलसिला शुरू हुआ, जिसने अनुवाद कार्य को प्रोत्साहन दिया।

औपनिवेशिक काल (१७००-१९४७ ई.) - ज्ञान परंपरा में संकट और पुनर्जागरण:

औपनिवेशिक काल में भारतीय ज्ञान परंपरा के समक्ष गम्भीर चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं । पाश्चात्य शिक्षा के आगमन और पारम्परिक संस्थाओं के पतन के कारण स्वदेशी ज्ञान को भारी क्षति पहुँची। ब्रिटिश शासकों ने 'अश्वेत ब्रिटिश' मानसिकता को बढ़ावा देकर भारत की सांस्कृतिक और ज्ञान परंपराओं को तोड़ने का लक्ष्य रखा। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रतिस्थापित किया, जिससे आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच, रचनात्मकता और उद्यमशीलता की भावना का ह्रास हुआ।

इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारतीय नवजागरण का उदय हुआ, जिसने स्वदेशी ज्ञान में पुनर्जीवित रुचि को प्रेरित किया। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द और श्री अरविन्द जैसे विचारकों ने भारतीय ज्ञान की पुनर्व्याख्या की और पाश्चात्य शिक्षण के साथ इसके समन्वय पर बल दिया। ब्रह्मो समाज और आर्य समाज जैसे सुधार आंदोलनों ने वैदिक मूल्यों की ओर लौटने का आह्वान किया।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

इस काल में पश्चिमी विद्वानों द्वारा भारतीय ग्रंथों के अध्ययन और अनुवाद ने वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान को पहचान दिलाई। 1904 में डॉ. आर. शमा शास्त्री द्वारा कौटिल्य के अर्थशास्त्र की पुनर्खोज'' एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन को पुनर्जीवित किया।

स्वतंत्र्योत्तर काल (१९४७ ई. - अब तक) - ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान और आधुनिकीकरण:

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान के प्रयास तीव्र हुए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को शैक्षणिक मुख्यधारा में सम्मिलित करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस नीति का लक्ष्य भारतीय ज्ञान परम्पराओं के आधार पर शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन द्वारा एक परिवर्तनकारी यात्रा आरम्भ करना है।

आधुनिक काल में योग, आयुर्वेद, ध्यान और जैविक कृषि जैसे पारम्परिक ज्ञान के विभिन्न रूपों ने वैश्विक मान्यता प्राप्त की है. वैज्ञानिक अनुसंधान ने इन पद्धतियों की प्रभावकारिता को सत्यापित किया है, विशेष रूप से योग और आयुर्वेद ने वैश्विक स्वास्थ्य प्रणालियों में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। सी.वी. रमन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और विक्रम साराभाई जैसे आधुनिक वैज्ञानिकों ने भारतीय विज्ञान को वैश्विक मंच पर पहुँचाया।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का समकालीन महत्व:

भारतीय ज्ञान प्रणाली का समकालीन महत्व निर्विवाद है. कौटिल्य के अर्थशास्त्र के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक बने रहने

के सम्बन्ध महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा समर्थित शिक्षा क्षेत्र में एक विशाल क्रान्ति की कल्पना की गई है।भारत के पास ज्ञान का अपार भंडार है, जिसकी कई पांडुलिपियों का अभी पता लगाया जाना बाकी है। 14 विद्या और 64 कला के रूप में वर्णित भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, व्यावहारिक शिक्षा, कला, कौशल, शिल्प कौशल, कृषि, स्वास्थ्य और विज्ञान शामिल हैं। इन परंपराओं का अध्ययन, अनुकूलन और आधुनिक जीवन में एकीकरण होगा, जिससे हर क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन की सम्भावना है।

शिक्षा की प्रक्रिया में जब तकनीकी या प्रौद्योगिकी मिश्रण किया जाता है तो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारी शिक्षण प्रक्रिया पर पड़ता है । जब शिक्षण में मशीन एवं अभिक्रमित अनुदेशन का प्रयोग होता है तो वह शिक्षा तकनीकी कहलाती है, साथ ही शिक्षा उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप से लिखना एवं उनकी प्राप्ति के लिए दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग करने को भी शिक्षा तकनीकी कहा जाता है। शिक्षा तकनीकी को परिभाषित करते हुए एस. एस. कुलकर्णी ने लिखा है: "तकनीकी तथा विज्ञान के आविष्कारों एवं नियमों का शिक्षा की प्रक्रिया में प्रयोग को ही शिक्षा तकनीकी कहा जाता है।"

भारत, विश्व में शिक्षा की विकासशील दुनिया में प्रौद्योगिकी का एकीकरण सिखाने के भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में खड़ा है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को और सुलभ बना दिया है। ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म और शैक्षिक ऐप के साथ, छात्र इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी शिक्षण सामग्री और कोर्स वर्क तक पहुंच सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में, 'भारतीय' शब्द, भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक और सांस्कृतिक इकाई को संदर्भित करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान प्रणालियों की एक समृद्ध और विविध श्रृंखला शामिल है। जिसमें दर्शन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कला से संबंधित ज्ञान प्रणालियाँ शामिल हैं। परंपरा लोगों या समाज के एक समूह के भीतर प्रतीकात्मक अर्थ या अतीत में कोई विशेष महत्व रखने वाले विश्वासों या व्यवहारों को कहते हैं। परंपराएँ हजारों वर्षों तक बनी और विकसित हो सकती हैं। इसी कारण यह माना जाता है कि परंपराओं का एक प्राचीन इतिहास होता है। साधारण शब्दों में कहें तो परंपरा वह ज्ञान, तकनीकी जानकारी, कौशल एवं प्रथाएँ हैं जो एक समुदाय के भीतर पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित, कायम और हस्तांतरित होती हैं, जो अक्सर इसके सांस्कृतिक या आध्यात्मिक पहचान का हिस्सा बन जाती हैं। भारतीय ज्ञान प्रणालियों में ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन शामिल है जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित हुए हैं।

निष्कर्ष :

वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक विकास निरंतरता, अनुकूलन और नवाचार की एक अद्भुत गाथा है. आज भारतीय ज्ञान प्रणाली न केवल ऐतिहासिक महत्व की वस्तु है, बल्कि वैश्विक चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है. जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ विकास, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सद्भाव जैसे जटिल मुद्दों के समाधान में भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्ध संसाधन मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का भविष्य इसकी प्रासंगिकता को बनाए रखने और आधुनिक संदर्भों में इसके पुन: व्याख्या करने की क्षमता पर निर्भर करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित शैक्षणिक सुधार इस दिशा में एक साहसिक कदम है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के कार्यान्वयन से न केवल शिक्षा में क्रांति आएगी बल्कि भारतीय मानस और जीवन शैली का भी कायाकल्प होगा। इसके फलस्वरूप आने वाले दशकों में 50 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होने की उम्मीद है, जिससे भारत के आत्म-सम्मान और आर्थिक विकास को गति मिलेगी।

भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी शक्ति इसका लचीलापन और समय की कसौटी पर खरा उतरना रहा है। वैदिक काल से डिजिटल युग तक की इस अविच्छिन्न यात्रा ने इसे सार्वभौमिक और शाश्वत बना दिया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इस अमूल्य विरासत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आलोचनात्मक चिंतन के साथ अपनाएँ ताकि मानव कल्याण और वैश्विक शांति के लिए इसकी पूर्ण क्षमता का दोहन कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ:

1.ऋग्वेद 10.191.2
2.निरुक्त 13.12
3. संपादक देवकी सिरोला, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा, कुनाल बुक्स प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 79
4.महोपनिषद्, अध्याय ४, श्लोक ७१
5. वहीं पृष्ठ संख्या 79
6. वहीं पृष्ठ संख्या 79
7.वहीं पृष्ठ संख्या 81

◆◆◆